आलस्य समर्पण नहीं है

प्रश्न : आप हमेशा कहते हैं, ध्यान है कुछ न करना, मात्र होना, और समर्पण है द्वार। फिर आप अनेक योग और साधनाएं भी करने को कहते हैं। मेरी मुसीबत यह है कि कुछ न करने और समर्पण-भाव से जीने से तमोगुण बढ़ता नजर आता है और साधनाएं करने से अहंकार के तीक्ष्ण होने का खतरा आने लगता है। ऐसी दशा में क्या मार्ग है?

न तो समर्पण करते हो, न साधना करते हो। जब मैं समर्पण की बात करता हूं, तब तुम साधना की बात सोचते हो। और जब मैं साधना की बात करता हूं, तब तुम समर्पण की बात सोचते हो। बेईमान चित्त की दशा है।

पश्चिम के बहुत बड़े विचारक पैस्कल ने कहा है कि एक सदी में अगर तीन ईमानदार आदमी भी मिल जाएं, तो बहुत है—सौ वर्षों में। क्योंकि बेईमानी जन्मजात है। और बेईमानी खून में छिपी है।

मेरे पास रोज यही प्रश्न खड़ा रहता है। अगर मैं किसी को कहता हूं कि कुछ न करो, तो वह कहता है, यह कैसे होगा? कुछ तो करना ही पड़ेगा। मैं कहता हूं, चलो, कुछ करो। वह कहता है, कुछ करेंगे, तो अहंकार बढ़ जाएगा।

ये बहाने हैं। ये जीवन को जैसा है, वैसा चलाए रखने के बहाने हैं। कुछ भी चुन लो; दोनों से एक जगह पहुंचना हो जाता है। फिर दूसरे की बात ही मत करो। दोनों रास्ते वहीं पहुंचाते हैं। तुम एक रास्ते पर चार कदम चलते हो, फिर दूसरे रास्ते पर चार कदम चलते हो, फिर पहले रास्ते पर चार कदम चलते हो। तुम वहीं

के वहीं बने रहोगे। तुम कभी पहुंचोगे नहीं।

तुम कोई भी एक रास्ता चुन लो, फिर फिक्र छोड़ो। हर रास्ते की सुविधाएं हैं और हर रास्ते की कठिनाइयां हैं।

तुम्हारी बेईमानी इसलिए पैदा होती है कि तुम चाहते हो, हर रास्ते की सुविधा भी तुम्हें मिल जाए, दोनों की सुविधाएं मिल जाएं। और तुम चाहते हो, दोनों की असुविधाओं से भी बचना हो जाए। तब तुम्हारे मन में एक दुविधा पैदा होती है। तब तुम त्रिशंकु हो जाते हो।

एक रास्ता चुन लो। अगर समर्पण ठीक लगता है, चुन लो। लेकिन समर्पण तुम वहीं तक चुनते हो, जहां तक तुम्हें आलस्य के लिए सुविधा मिले।

मैं चकित होता हूं कभी-कभी सोचकर कि लोग जिन शब्दों का उपयोग करते हैं, कभी उन पर विचार भी करते हैं या नहीं! समर्पण तुम चुनते हो सिर्फ इसलिए, ताकि कुछ न करना पड़े। समर्पण नहीं चुनते, कुछ न करना चुनते हो। खाली बैठे रहो।

तुम आलस्य चुनना चाहते हो, समर्पण में बहाना खोजते हो। फिर आलस्य से तो कोई परमात्मा मिलता नहीं, कोई सत्य मिलता नहीं। तो जल्दी ही तुम्हारे भीतर यह लगने लगता है, समर्पण से कुछ नहीं मिल रहा है। समर्पण तुमने ा कभी किया नहीं। तुमने आलस्य के लिए समर्पण शब्द का बहाना खोज लिया। फिर आलस्य से तो परमात्मा मिलता नहीं, तो तुम्हारे मन में विचार उठना शुरू होता है कि अब इससे त ा ` ि म ल नहीं रहा है।

समर्पण किया ही नहीं, मिलने की आकांक्षा रखे बैठे हो। तो फिर सोचते हो, कुछ करें। तो कुछ करना शुरू करते हो। वह करना भी संकल्प नहीं है, वह करना भी साधना नहीं है। वह करना भी आलस्य से अहंकार को जो चोट लगती है...। क्योंकि आलसी को कोई आदर तो मिलता नहीं, कहीं नहीं मिलता। संसार तो करने वालों का है।

आलसी को आदर नहीं मिलता। आलसी सोचता है, हम समर्पण किए हैं। आदर उसे मिलता नहीं। वह चाहता है, दुनियाभर में खबर हो जाए कि हमारा समर्पण हो गया, देखो। सम्मान मिले! सम्मान दुनिया आलस्य को नहीं देती। और समर्पण हो जाए, तो सम्मान की इच्छा नहीं होती।

तो धीरे-धीरे बेचैनी पैदा होती है कि यह तो जिंदगी ऐसे ही जा रही है; कुछ पा भी नहीं रहे, सिर्फ मक्खियां उड़ रही हैं चारों तरफ आलस्य की। तो आदमी करने में लगता है। करता है, तो अहंकार खड़ा होता है। तब तुम्हारे मन में चिंताएं कुछ भी चुन लो एक। अगर तुम समर्पण चुनते हो, तो आलस्य से बचना वहां जरूरी है।

अब यह बड़े मजे की बात है। आलसी समर्पण चुनते हैं और समर्पण के मार्ग पर आलस्य से बचना अनिवार्य है। क्योंकि वही खाई है वहां, वही खतरा है। अगर तुम संकल्प चुनते हो, तो अहंकार से बचना वहां जरूरी है, क्योंकि वही वहां खतरा है।

समर्पण में अहंकार का खतरा नहीं है और संकल्प में आलस्य का खतरा नहीं है। खतरे को देख लो। इसलिए अगर समर्पण करना है, तो समर्पण को अकर्मण्यता मत बना लेना। कर्म तो करना, कर्ता-भाव परमात्मा पर छोड़ देना।

लेकिन तुम कर्ता-भाव तो छोड़ते नहीं, कर्म छोड़ते हो परमात्मा पर। कर्ता-भाव बचाते हो और चाहते हो कि दुनिया तुम्हें सम्मान दे ऐसा, जैसे कि तुम बड़े साधक हो, बड़े कर्ता हो, बड़ी साधना की है, बड़े सिद्ध पुरुष हो। वह नहीं होगा।

चीजें बिलकुल साफ हैं। और अगर धुंधला-धुंधला तुम्हें लगता है, तो तुम धुंधलापन पैदा कर रहे हो। तुम चीजों को साफ देखना नहीं चाहते।

कल ही एक युवक मेरे पास आया। वह कहता है कि सब आपको समर्पण। जो आप तो

अब यह बड़े मजे की बात है। आलसी समर्पण चुनते हैं और समर्पण के मार्ग पर आलस्य से बचना अनिवार्य है। क्योंकि वही खाई है वहां, वही खतरा है। अगर तुम संकल्प चुनते हो, तो अहंकार से बचना वहां जरूरी है, क्योंकि वही वहां खतरा है

कहेंगे, वह मैं करूंगा। मैंने उससे पूछा, तू करता क्या है अभी? उसने कहा कि मैं फार्मेसी में पढ़ता हूं। मगर फेल हो गया हूं। तो मैंने उसको कहा कि तू जा फार्मेसी की पढ़ाई पूरी कर ले। वह कहता है, वह तो मुझसे हो ही नहीं सकता। अभी एक क्षण पहले मुझसे कहता है, जो आप कहेंगे, वह मैं करूंगा। फार्मेसी? वह तो मुझसे हो ही नहीं सकता। वह तो मैं कभी जीवन में उत्तीर्ण हो ही नहीं सकता। आप जो भी कहेंगे, वह मैं करूंगा, यह भी वह कहे चला जा रहा है।

हम अपने चित्त की दशा को भी नहीं देख पाते। अब फार्मेसी पूरी नहीं होती, परमात्मा को पूरा करने का इरादा हो रहा है। वह फार्मेसी से भागकर परमात्मा में शरण ले रहा है। और जिसकी इतनी भी हिम्मत नहीं है कि एक छोटे-से काम को पूरा कर ले, वह और क्या पूरा कर पाएगा?

तो मैंने उसे कहा, पहले फार्मेसी पूरी कर, फिर त्याग देना।

सफल आदमी त्याग कर सकता है; असफल आदमी त्याग नहीं कर सकता। कभी किसी चीज को असफल होकर मत त्यागना, नहीं तो वह तुम्हारे जीवन की शैली हो जाएगी। फिर तुम कभी सफल न हो पाओगे। जो भी छोड़ना हो, सफल होकर छोड़ना। अगर संसार छोड़ना हो, तो सफल होकर छोड़ना। पद छोड़ना हो, सफल होकर छोड़ना। धन छोड़ना हो, तो पाकर छोड़ना।

धन में तो कोई मूल्य नहीं है, लेकिन तुम पा सकते हो; वह जो भाव की बुनियाद बनती है, उसका मूल्य है। वह काम आएगी। तुम जहां भी जाओगे, जिस दशा में भी जाओगे, वहां काम आएगी।

अपना मार्ग साफ कर लेना चाहिए। अगर तुम अहंकारी हो, तो समर्पण तुम्हारे लिए मार्ग है। अगर तुम आलसी हो, तो संकल्प तुम्हारे लिए मार्ग है।

तुम कहोगे, यह तो मैं उलटी बात बता रहा हूं। आलसी को तो बताना चाहिए समर्पण, और अहंकारी को बताना चाहिए संकल्प।

नहीं, तब तो तुम अपनी बीमारी को औषधि समझ रहे हो। अपने को ठीक से समझ लो। और तुम्हारी जो बीमारी हो, उसको समझ लो।

संकल्प के मार्ग पर अहंकार बढ़ता है। अगर अहंकार तुम्हारी बीमारी है, तो उस मार्ग पर तुम मत जाओ, अन्यथा वह भयंकर हो जाएगा। समर्पण के मार्ग पर आलस्य के बढ़ने की संभावना है। अगर आलस्य तुम्हारी बीमारी है, तो कृपा करके उस तरफ मत जाओ। आलस्य वाला संकल्प की तरफ जाए, तो संकल्प आलस्य को काटता है। अहंकारी समर्पण की तरफ जाए, तो समर्पण अहंकार को काटता है। गणित बिलकुल सीधा-साफ है। कहीं भी कोई धुंधलका, अंधेरा, उलझन नहीं है।

लेकिन तुम बीमारी को औषधि समझ लो, फिर अड़चन आती है। और फिर तुम बदलते जाओ; दो-चार कदम चले नहीं कि फिर बदल लिया, फिर दो-चार कदम चले नहीं कि फिर बदल लिया; फिर तुम कभी भी न पहुंच पाओगे। लगेगा, चल बहुत रहे हो, लेकिन पहुंच कहीं भी नहीं रहे हो। यात्रा व्यर्थ ही जाएगी। और तुम धीरे-धीरे ज्यादा से ज्यादा भ्रम में भर जाओगे। तुम्हारे नीचे की बुनियाद कंपने लगेगी। तुम्हारा चित्त कंपित, भयभीत, डरा हुआ हो जाएगा। तुम अपने ऊपर आस्था खो देना। जिसकी स्वयं पर आस्था नहीं है, वह किसी दूसरे पर आस्था कर ही नहीं सकता।

मेरे पास लोग आते हैं, वे कहते हैं कि हम दूसरे पर आस्था नहीं करना चाहते। हमारी तो अपने पर ही आस्था है। मैं उनसे कहता हूं, जिसकी अपने पर आस्था है, वह किसी पर भी आस्था कर सकता है। और जिसकी अपने पर आस्था नहीं है, वह किसी पर आस्था नहीं कर सकता। जो भीतर ही नहीं है, उसे तुम बाहर कैसे फैलाओगे?

गुलाब के फूल में जो गंध आती है, वह गुलाब के भीतर से आती है। गंध दूर-दूर फैल जाती है हवाओं में। तुम्हारे कपड़ों पर छा जाती है, तुम्हारे नासापुटों में भर जाती है। गुलाब के पास से गुजरो, तो घंटों तक तुम्हें गुलाब की भनक मालूम पड़ती रहती है। लेकिन सुगंध भीतर से आती है।

आस्था अगर तुम्हारी स्वयं पर है, तो तुम गुरु पर आस्था कर सकोगे, तो तुम परमात्मा पर आस्था कर सकोगे। स्वयं की आस्था में और दूसरे पर आस्था में विरोध नहीं है। वे एक ही सुगंध की दो तरंगें हैं

आस्था अगर तुम्हारी स्वयं पर है तो तुम गुरु पर आस्था कर सकोगे, तो तुम परमात्मा पर आस्था कर सकोगे। स्वयं की आस्था में और दूसरे पर आस्था में विरोध नहीं है। वे एक ही सुगंध की दो तरंगें हैं।

लेकिन जिसकी स्वयं पर आस्था नहीं है, वह किसी पर आस्था नहीं कर सकेगा। और जो किसी पर आस्था नहीं करता है, उसे सम्हल जाना चाहिए, संभावना है कि उसकी स्वयं पर भी आस्था नहीं होगी।

मनुष्य के जीवन में जितनी अड़चनें दिखाई पड़ती हैं, उतनी अड़चनें हैं नहीं। बहुत-सी तो बनाई हुई हैं। फिर तुम बना लेते हो, फिर अपने ही जाल में उलझ जाते हो। और फिर उस जाल से निकलना भी नहीं चाहते। और निकलना भी चाहते हो। क्योंकि जाल कष्ट देता है, तो निकलना चाहते हो। और जाल थोड़ा-सा सुख भी दे रहा है, इसलिए निकलना भी नहीं चाहते। एक हाथ से पकड़े रहते हो, एक हाथ से छोड़ना चाहते हो।

— ***ओशो***
गीता दर्शन, भाग–8,
अध्याय–18, प्रवचन–5, तीसरा प्रश्न
(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)